



सितम्बर: 2021

वर्ष : 4 अंक : 12

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



संस्थान का मासिक समाचार, सितंबर 2021 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

सर्वप्रथम मैं आप सभी को हिन्दी दिवस की बधाई देता हूँ।

14 सितंबर का दिन हम सभी भारतीयों के लिए बेहद गौरवमयी दिन है स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत का संविधान तैयार करने के लिए संविधान का गठन हुआ। लेकिन भारत की कौन सी राष्ट्रभाषा चुनी जाएगी, ये एक महत्वपूर्ण मुद्दा सामने आया और तब हिंदी और अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में चुना गया। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी और हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला। तब से हर साल इस दिन हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमारी वर्तमान सरकार का कदम सराहनीय है। आज देश के नेता विदेशों में जाकर भी हिंदी में वक्तव्य को महत्ता दे रहे हैं। ऐसा इसलिए किया जा रहा है ताकि भारत के साथ-साथ विश्व स्तर पर भी हिंदी भाषा के महत्व को स्थापित किया जाए। यह हमारी सरकार के प्रयासों का ही नतीजा है तो हिंदी बोलने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि देखी जा रही है।

प्रस्तुत सितंबर 2021 अंक में संस्थान में हुये अगस्त माह के कार्यकलापों का विवरण दिया गया है। इस महीने संस्थान में दिनांक 15 अगस्त 2021 को आजादी का अमृत महोत्सव और देश का 75वाँ स्वाधीनता दिवस मनाया गया जिसमें सामाजिक दूरी बनाए रखने का पूरा प्रयास किया गया था।

अंत में, आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

बि.के.दास

(बसन्त कुमार दास)

भारत का अमृत महोत्सव के अवसर पर डॉ. एस. अय्यप्पन, पूर्व सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का संस्थान के प्लेटिनम जयंती वर्ष का प्रथम व्याख्यान



भारत के स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में भारत का अमृत महोत्सव और भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की स्थापना के 75वें वर्ष में संस्थान में व्याख्यान श्रृंखला रखी गई है। इसी क्रम में दिनांक 3 अगस्त 2021 को ऑनलाइन मोड में प्रख्यात मात्स्यिकी वैज्ञानिक, डॉ. एस. अय्यप्पन, पूर्व सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की वक्तृता आयोजित की गई। डॉ. अय्यप्पन के व्याख्यान का शीर्षक था, “सीआईएफआरआई: रिमेम्बरिंग विद रेवरेंस” (सिफरी: एक अभूतपूर्व यादों के झरोखे से)। इस सत्र में माननीय उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), मात्स्यिकी जगत के गणमान्य वैज्ञानिक, संस्थान के पूर्व निदेशकगण, संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी और मत्स्य पालन से जुड़े किसान आदि ने भाग लिया।

व्याख्यान सत्र के आरंभ में संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने डॉ. एस. अय्यप्पन और सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों को संस्थान की विकास यात्रा के बारे में संक्षेप में बताया।

डॉ. अय्यप्पन ने अपनी सेवाकाल सिफरी के वैज्ञानिक से आरंभ किया था। निदेशक महोदय ने परिषद के अंतर्गत डॉ. अय्यप्पन की उपलब्धियों (सिफरी में वैज्ञानिक से लेकर में शीर्ष पद, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक बनने तक की यात्रा) पर प्रकाश डाला।

डॉ. अय्यप्पन ने अपने व्याख्यान के आरंभ में निदेशक, डॉ. बि. के. दास को परिषद की प्रतिष्ठित सरदार पटेल सर्वश्रेष्ठ आईसीएआर संस्थान पुरस्कार- 2020 और रफी अहमद किदवई पुरस्कार जीतने के लिए बधाई दी। उन्होंने सिफरी के गौरवशाली उपलब्धियों का संक्षेप में वर्णन किया। उन्होंने भारत में कृषि और मत्स्य पालन क्षेत्र में वर्तमान विकास को बताया। उन्होंने वर्ष



1947 से वर्तमान तक राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (एनएआरएस) में सिफरी के योगदान के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने विजन 2030 और 2050 पर उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ मछली किसानों की आय दोगुनी करने के बारे में संस्थान द्वारा विकसित पिंजरा और पेन पालन प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया, जो न केवल जलाशयों और आर्द्रभूमि से उत्पादन बढ़ाने में मदद करते हैं, बल्कि मछुआरों की आजीविका और आय वृद्धि करते हैं। उन्होंने प्रौद्योगिकी के विलय, मत्स्य पालन क्षेत्र में नवाचार और स्टार्ट अप, कोविड-19 और मत्स्य पालन और जलीय कृषि पर इसके प्रभाव, प्रधानमंत्र मत्स्य सम्पदा योजना के घटकों, प्रमुख



लक्ष्यों और अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन से संबंधित योजनाओं पर जोर दिया। उन्होंने सिफ्राई के उन सभी गणमान्य वैज्ञानिकों को धन्यवाद देते हुए अपने व्याख्यान का समापन किया, जिन्होंने भारत में नीली क्रांति लाने में मदद की और देश को गौरवान्वित किया।

डॉ. एमवी गुप्ता, पूर्व सहायक महानिदेशक, वर्ल्ड फिश और वर्ल्ड

फूड पुरस्कार विजेता डॉ. अय्यप्पन को उनके इतने सूचनापरक और अनुपम व्याख्यान के लिए धन्यवाद दिया और संस्थान में अपने कार्य के बारे में बताया।

Journey of a Heritage Fisheries Institute



Barracks, 17 March 1947



47/1, Strand Road, Calcutta, 1949



Barrackpore, 17 June 1959



And Now...

डॉ ए. एकनाथ, पूर्व महानिदेशक, एनएसीए ने अपने संबोधन में डॉ. एस. अय्यप्पन के उत्कृष्ट व्याख्यान और मत्स्य पालन और कृषि क्षेत्र में सेवा देने के लिए आभार प्रकट किया। उन्होंने इस वेबिनार को आयोजित करने के लिए सिफरी को बधाई दी।

डॉ. दिलीप कुमार, पूर्व कुलपति और निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान ने अपने संबोधन में डॉ. एस. अय्यप्पन को उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कृषि के साथ-साथ मत्स्य पालन क्षेत्र में डॉ. अय्यप्पन के योगदान की सराहना की।

डॉ. जे.के. जेना, उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अपने संबोधन में कहा कि डॉ. एस अय्यप्पन की प्रस्तुति मंत्रमुग्ध कर देने वाली और मनमोहक थी। उन्होंने इस अद्भुत व्याख्यान के लिए डा. अय्यप्पन को बधाई दी।

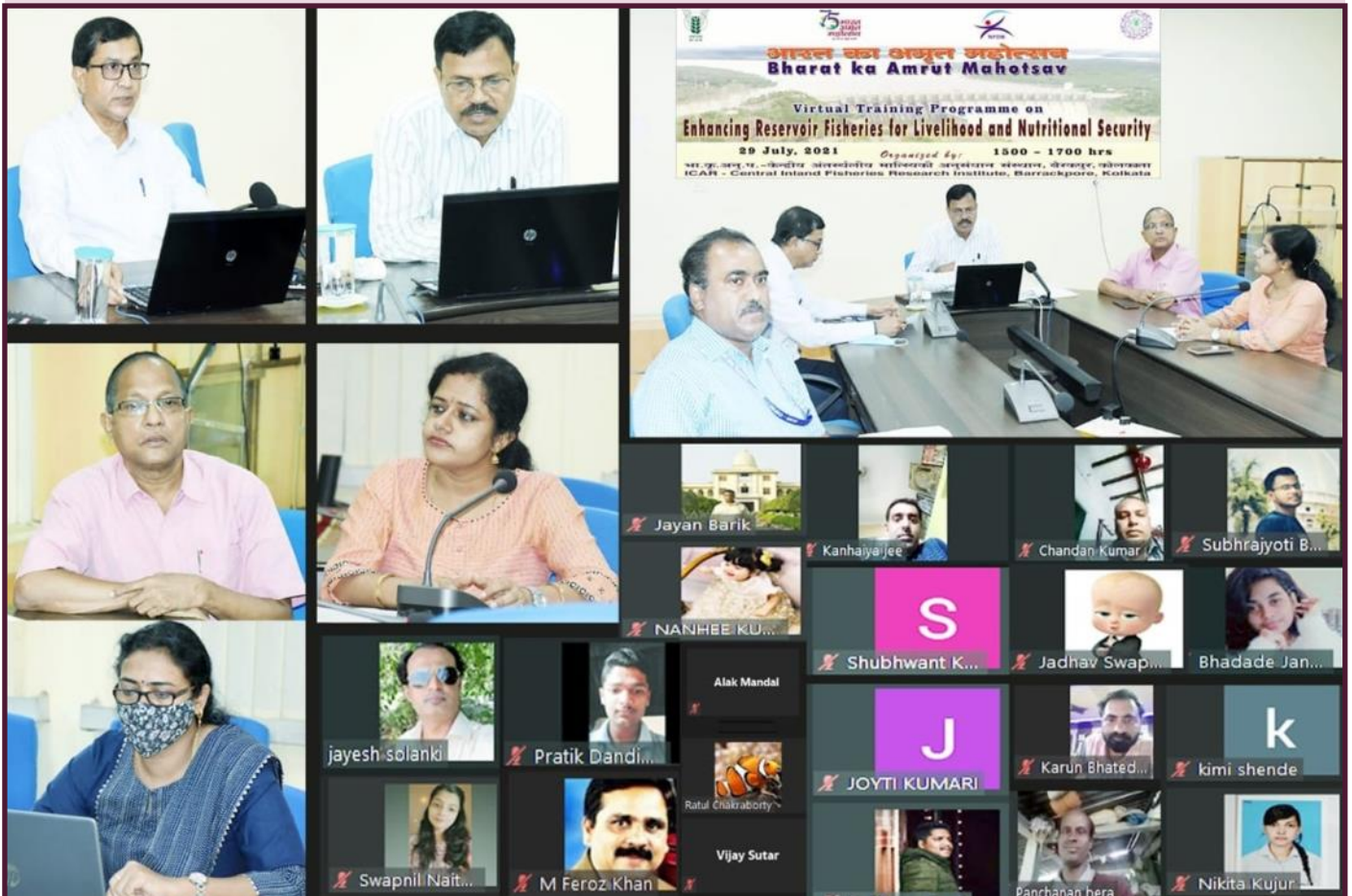
डॉ. के सुरेश, आईएएस (सेवानिवृत्त) और पूर्व सिफरियन ने कहा कि यह व्याख्यान संस्थान से उनके जुड़ाव और कार्यों की याद दिलाया है। उन्होंने मत्स्य पालन क्षेत्र में डॉ अय्यप्पन के योगदान पर भी जोर दिया।

डॉ. ए.पी शर्मा, पूर्व निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने डॉ. एस. अय्यप्पन को संस्थान की प्लेटिनम जुबली के पहले व्याख्याता होने के लिए बधाई दी। उन्होंने डॉ. अय्यप्पन ने अंतर्स्थलीय क्षेत्र में योगदान की सराहना की।

डॉ. एन. सारंगी, पूर्व निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय मीठा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान (सीफा) ने डॉ. अय्यप्पन को मत्स्य पालन क्षेत्र में और सीफा के इतिहास के बारे में उनकी महान योगदान के लिए बधाई दी।

डॉ. वी. वी सुगुणन, पूर्व सहायक महानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने डॉ. अय्यप्पन को सिफरी के बारे में उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए बधाई दी। उन्होंने अंतर्स्थलीय क्षेत्र के लिए सिफरी योगदान पर जोर दिया।

संस्थान में आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए जलाशय में मत्स्य उत्पादन वृद्धि” पर राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड द्वारा प्रायोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण का आयोजन



भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में दिनांक 29.07.2021 को "आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए जलाशयों में मत्स्य उत्पादन वृद्धि" पर राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड द्वारा प्रायोजित एक ऑनलाइन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस आभासी प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को मत्स्य पालन बढ़ाने के लिए जलाशयों के महत्व तथा आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए जलाशय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर जागरूक करना था। इसके उद्घाटन सत्र में डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और उन्हें पोषण और आजीविका सुरक्षा में सुधार के लिए जलाशयों में सतत मत्स्य पालन को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. यू.के. सरकार, प्रभागाध्यक्ष, जलाशय एवं आर्द्रक्षेत्र मात्स्यिकी प्रभाग, सिफरी ने भारत में जलाशय मत्स्य प्रबंधन में वर्तमान प्रगति को प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में डॉ. ए. के. दास, प्रभारी, प्रशिक्षण और विस्तार इकाई, सिफरी ने आजीविका सुरक्षा के लिए जलाशय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। डॉ. सुमन कुमारी, वैज्ञानिक, जलाशय एवं आर्द्रक्षेत्र मात्स्यिकी प्रभाग, सिफरी ने जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन में जैविक समुदायों की भूमिका पर व्याख्यान दिया। डॉ. अपर्णा रॉय, वरिष्ठ वैज्ञानिक, प्रशिक्षण और विस्तार इकाई, सिफरी ने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएसवाई) पर प्रतिभागियों को जलाशय में मत्स्य पालन वृद्धि पर बनाए गए विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्रों, मात्स्यिकी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के संकाय प्रमुख, विभिन्न राज्यों के मत्स्य विभागों के अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केन्द्रों के विशेषज्ञों, प्रगतिशील किसानों, मछुआरों, उद्यमियों, गैर सरकारी संगठनों, विभिन्न राज्यों जैसे पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, झारखंड, मध्य प्रदेश के स्वयं सेवी संस्थाओं आदि से कुल 118 प्रतिभागियों ने सक्रिय तौर पर भाग लिया।

एनएएसएफ परियोजना के तहत संस्थान में "हिलसा, टेनुआलोसा ईलिशा का घेरे में प्रजनन: चरण II " पर भागीदार संस्थानों की बैठक



संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में एनएएसएफ परियोजना के अंतर्गत दिनांक 03 अगस्त 2021 को ऑफलाइन और ऑनलाइन मोड में "हिलसा, टेनुआलोसा ईलिशा का घेरे में प्रजनन : चरण II" विषय पर एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में संस्थान के निदेशक तथा परियोजना के प्रधान समन्वयक, डा. बि. के. दास के साथ संस्थान के प्रशासनिक कर्मी और भागीदार संस्थानों के सह-समन्वयकों ने भाग लिया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीनस्थ विभिन्न संस्थानों के निदेशक और सहयोगी संस्थानों के सह-समन्वयक और प्रतिभागी ऑनलाइन मोड में उपस्थित थे। बैठक में डॉ. बि के दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), बैरकपुर (प्रमुख संस्थान); डॉ. गोपाल कृष्ण, निदेशक और कुलपति, भाकृअनुप-केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, मुंबई; डॉ. एस.के. स्वैन, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय मीठा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर; डॉ. के.पी. जितेंद्रन, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय खारा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान, चेन्नई; डॉ. एस. सामंत, कंसोर्टियम समन्वयक, सिफरी; डॉ. डी. एन. चट्टोपाध्याय, सह-समन्वयक, भाकृअनुप-केंद्रीय मीठा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर; डी. डी. डी., सह-समन्वयक, भाकृअनुप-केंद्रीय खारा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान, चेन्नई; डॉ. एस. दासगुप्ता, सह-समन्वयक, भाकृअनुप-केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान; डॉ. बी. के. बेहरा, सह-समन्वयक, सिफरी; डॉ. आर के मन्ना, सह-समन्वयक, सिफरी और डॉ. ए के साहू, सह-समन्वयक, सिफरी। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डा. बि के दास, निदेशक ने सहयोगी संस्थानों के सभी निदेशकों से अनुरोध किया कि वे परियोजना के कार्यान्वयन में आने वाली सभी प्रकार की बाधाओं को दूर करने के लिए पहल करें। विनाशकारी चक्रवात "यास" के कारण हुए नुकसान और कोविड महामारी से निपटने के लिए परियोजना समन्वयकों को हर संभव सहयोग की अपेक्षा रखते हैं। परियोजना समन्वयक, डॉ गोपाल कृष्ण ने कहा कि उनके

संचालन में तकनीकी कार्यक्रम की पूरा उत्तरदायित्व परियोजना समन्वयक और सह- समन्वयक का होगा। भाकृअनुप-केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, रहारा, कोलकाता के वैज्ञानिक] डॉ. एस.के. स्वैन ने परियोजना गतिविधियों को पूर्ण समर्थन के साथ हिलसा प्रजनन के लिए एक प्रमुख कारक के रूप में पर्यावरणीय कारकों, लवणता के अलावा हार्मोन संबंधित परिवर्तन की निगरानी पर जोर दिया। डॉ. के.पी. जितेंद्रन ने हिलसा के क्षेत्रीय महत्व के साथ-साथ इसके संरक्षणात्मक लाभों पर जोर दिया



जिससे प्रजातियों की गोनैडल परिपक्वता को अधिक व्यावहारिक तरीके से निपटाया जा सके। डॉ. दास ने परियोजना सदस्यों सहित सभी निदेशकों को मीडिया में परियोजना संबंधी किसी भी जानकारी प्रदान करने में सतर्क किया। डॉ. एस सामंत, डॉ. डी एन चट्टोपाध्याय, डॉ. डी. के. दे और डॉ. एस दासगुप्ता पिछले 6 महीनों के दौरान की गई उद्देश्य-वार प्रगति को प्रस्तुत किया और अगले 3 महीनों में किए जाने वाले कार्यों की प्रस्तावित अनुसंधान योजना पर चर्चा की जिसके बाद संबंधित आईसीएआर भागीदार संस्थानों का बजट उपयोग किया गया। इस बैठक में 'विनाशकारी चक्रवात,' यास' के कारण भाकृअनुप-केन्द्रीय खारा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान के काकद्वीप, पश्चिम बंगाल स्थित ब्रूड मछली तालाबों और कोलाघाट के तालाबों की चर्चा की गयी।

इस तरह के नुकसान के कारण परियोजना लक्ष्यों को प्राप्त करने में विलंब होने का अंदेशा बना रहता है। डॉ. दास ने परियोजना के सदस्यों से अत्यधिक सहयोग के लिए कहा तथा सभी निदेशकों से इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय परियोजना के लिए संबंधित संस्थान निधि से आवश्यकता-आधारित वित्तीय सहायता प्रदान करने का अनुरोध किया। प्राकृतिक आपदा से बचने के लिए कई तालाबों में हिलसा स्टॉक करने का सुझाव दिया गया। हिलसा के प्रजनन के लिए संयुक्त सामान्य प्रोटोकॉल का विकास के साथ-साथ ब्रूड स्टॉक प्रबंधन के लिए अधिक तालाबों को जोड़ने पर बल दिया गया। डॉ. दास प्रशासनिक अधिकारियों से एनएसएफ-हिलसा परियोजना को प्राथमिकता देने का आग्रह किया और कहा कि संरक्षण की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, कोलाघाट और ऐसे अन्य क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम द्वारा स्थानीय हिलसा मछुआरों को आमंत्रित किया जाना चाहिए।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले में "सतत विकास के लिए कल्चर आधारित मत्स्य पालन पर जन जागरूकता कार्यक्रम" का आयोजन किया

भारत की आजादी का अमृत महोत्सव को मनाने के लिए, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने 4 अगस्त 2021 को संस्थान के निदेशक डॉ. वि.के.दास की प्रेरणा से कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले के करियाला गांव में



"सतत विकास के लिए कल्चर आधारित मत्स्य पालन पर जन जागरूकता कार्यक्रम" का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में चित्रदुर्ग जिले के गायत्री जलाशय में मत्स्य पालन गतिविधियों में लगे लगभग 40 मछुआरों ने भाग लिया। डॉ. प्रीता पणिक्कर, प्रधान वैज्ञानिक और बैंगलोर केंद्र के प्रभारी ने मछुआरों का स्वागत किया और उन्हें छोटे जलाशय से मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए अपनाई जाने वाली रणनीतियों के बारे में जानकारी दी। डॉ. अजय साहा, वैज्ञानिक ने छोटे जलाशयों में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए जल गुणवत्ता प्रबंधन के महत्व के बारे में बताया। डॉ. विजयकुमार एम.ई., तकनीकी अधिकारी ने मछुआरा समुदाय की आजीविका में सुधार के लिए कल्चर आधारित मत्स्य पालन के महत्व के बारे में बताया। मछुआरों ने मछलियों पर परजीवी संक्रमण, जलाशय के जल स्तर में उतार-चढ़ाव जैसे विभिन्न मुद्दों पर भी बातचीत की क्योंकि यह क्षेत्र कई वर्षों से लगातार सूखे की चपेट में है। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. प्रीता पणिक्कर, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. अजय साहा, वैज्ञानिक और डॉ. विजयकुमार एम.ई., तकनीकी अधिकारी द्वारा सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।



भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 'एनएमसीजी परियोजना' के तहत सीआईएफआरआई@75 और इंडिया@75 की महोत्सव को मनाने के लिए गंगा नदी के किनारे कई स्थानों पर 5 लाख मछली जर्मप्लाज्म का रैन्चिंग किया

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, भारत की आजादी के 75वें वर्ष के साथ-साथ अपनी

स्थापना के 75वें वर्ष को भी 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के रूप में मना रहा है। इस महत्वपूर्ण अवसर को मनाने के लिए, संस्थान ने गंगा नदी के विभिन्न हिस्सों में भारतीय प्रमुख कार्प (लेबियो रोहिता, लेबियो कतला और सिरहिनास मृगला) के 5 लाख मछली जर्मप्लाज्म को प्रवाहित किया। 5 अगस्त 2021 को झारखंड और पश्चिम बंगाल राज्यों के महाराजपुर, साहेबगंज, फरका, जंगीपुर और बरहामपुर जैसे पांच अलग-अलग स्थानों से 'नमामि गंगे' परियोजना के तहत इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



गंगा नदी में विशेष रूप से भारतीय

प्रमुख कार्प (आईएमसी) जैसी आकर्षक और बेशकीमती मछलियों की संख्या में कई मानवजनित तनावों के कारण, इस अवधि में गंभीर रूप से गिरावट आई है। इस प्रकार, गंगा की इन अत्यधिक मांग वाली मछलियों को गंगा के चिन्हित किए गए हिस्सों में रैन्चिंग के माध्यम से फिर से स्थापित करना समय की मांग है, इसलिए गंगा नदी के समग्र अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन और जैव विविधता संरक्षण के लिए, संस्थान द्वारा की गई यह एक पहल है।

गंगा नदी के किनारे 250 से अधिक मछुआरों को संवेदनशील बनाया गया और उन्हें नदी के महत्व के बारे में बताया गया। जन जागरूकता अभियान के तहत मछुआरों को बेशकीमती हिल्सा सहित गंगा की मछलियों के संरक्षण के महत्व को समझाते हुए जागरूक किया गया। जागरूकता अभियान में, गंभीर रूप से लुप्तप्राय गंगा डॉल्फिन प्रजातियों के बारे में भी सभी को सजग किया गया ताकि नदी प्रणाली में इसकी स्वस्थ आबादी सुनिश्चित की जा सके।



संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज द्वारा गंगा नदी में 15000 भारतीय प्रमुख कार्प की अंगुलिमीनों की रैचिंग



संस्थान में दिनांक 15 अगस्त 2021 को आजादी का अमृत महोत्सव और देश का 75वाँ स्वाधीनता दिवस मनाया गया। प्रातः 8:50 बजे हमारे कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। परेड के बाद निदेशक महोदय ने झंडोत्तोलन किया और तिरंगे को सम्मान देते हुए समस्त उपस्थित लोगों को संबोधित किया। निदेशक महोदय ने अपने अभिभाषण में सर्वप्रथम संस्थान कर्मियों को धन्यवाद दिया कि उनके सहयोग से ही आज हमारा संस्थान नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। हमारा संस्थान नई उपलब्धियों और संस्थान के विकास के लिए अथक परिश्रम कर रहा है जिसका परिणाम है – संस्थान को परिषद के पुरस्कार से सम्मानित किया जाना - सरदार पटेल पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान संस्थान), रफी अहमद किदवई पुरस्कार (संस्थान के निदेशक, डा. बि. के. दास को उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए) तथा संस्थान की हिन्दी वार्षिक पत्रिका, नीलांजलि को प्रोत्साहन पुरस्कार। निदेशक महोदय ने बताया कि आज अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी, नमामि गंगे और जलवायु परिवर्तन आधारित निक्का परियोजना के कारण सिफरी की ख्याति दिन पर दिन और भी बढ़ती जा रही है। हमारे प्रकाशनों का Impact Factor लगभग 176.4 से अधिक है। संस्थान कर्मियों को सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराया जाता रहा है और उनकी पदोन्नति आदि समयानुसार हो रही हैं। यहाँ तक कि कोरोना काल के दौरान सीमित स्टाफ और सीमित परिवहन सुविधा में भी संस्थान के अनुसंधान कार्य निर्बाध गति से चलाए गए। इस प्रकार के सकारात्मक अभिवृद्धि के कारण संस्थान को गत वर्ष और इस वर्ष भी पुरस्कार मिले हैं।

निदेशक महोदय ने डा. जे के जेना, उपमहानिदेशक (मत्स्य विभाग) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की उक्ति,



“Collaboration, Cooperation, Communication” का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारा अनुसंधान भी इन चीजों पर आधारित हो जिससे सफलता के नये आयाम प्राप्त हो सकते हैं। गत 5 वर्षों में संस्थान में 6 commercialisation, 5 पेटेंट और 2 ट्रेडमार्क प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा कई पुरस्कार मिले हैं तथा तकनीकों, प्रौद्योगिकी, मोबाइल एप आदि विकसित हुए हैं।

निदेशक महोदय ने आगे बताया कि संस्थान के



कार्यों की गुणवत्ता को देखते हुए संस्थान को बहुत महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर कार्य करने का अवसर प्रदान किया गया है- जिनमें से एक है, Precision Farming ।

अंत में निदेशक महोदय ने सबको धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि संस्थान में अनुसंधान कार्यों से इसके विकास में उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिल रही है और अगर हम ऐसे ही सचेष्ट रहें तो भविष्य में अभूतपूर्व सफलताएँ अवश्य मिलेंगी। इसके पश्चात एक

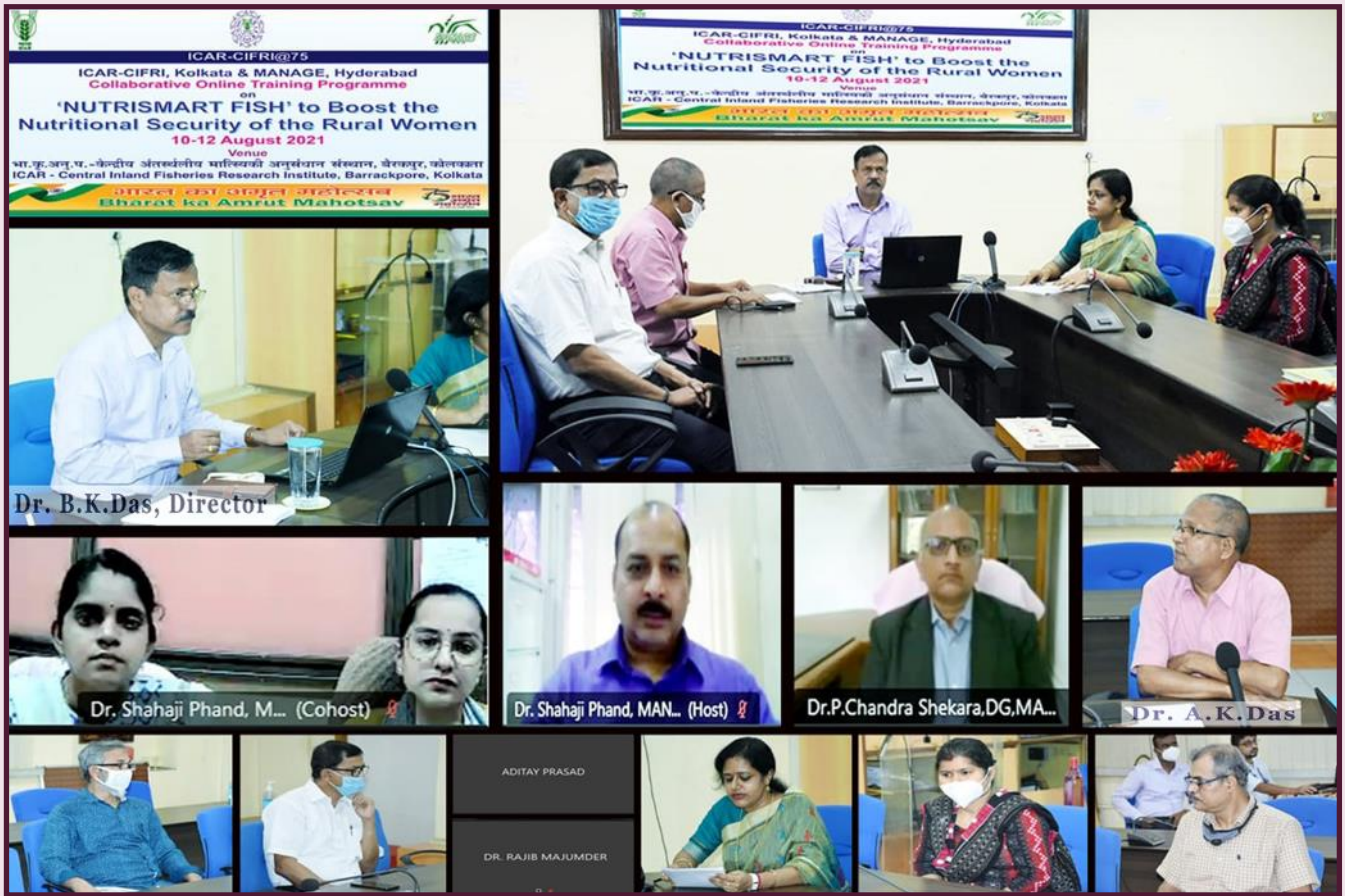


संस्थान ने "गंगा नदी में हिलसा मत्स्य संरक्षण और आजीविका सुधार पर संवेदीकरण" पर वर्चुअल वेबिनार का आयोजन किया



भारत की आजादी के 75 साल के उपलक्ष्य में, भारत का अमृत महोत्सव को मानते हुए, भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 11 अगस्त 2021 को "गंगा नदी में हिलसा मत्स्य संरक्षण और आजीविका सुधार पर संवेदीकरण" पर एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार के मुख्य उद्देश्य थे 1) नीतिगत हस्तक्षेप के माध्यम से गंगा नदी में हिलसा मत्स्य पालन का संरक्षण करना 2) हिलसा संरक्षण के प्रति मछुआरों में जागरूकता पैदा करना। संस्थान के निदेशक डॉ. वि.के.दास ने भारत, बांग्लादेश और म्यांमार के सभी आमंत्रित वक्ताओं और विभिन्न राज्यों के मत्स्य पालन समुदायों, छात्रों और सरकारी अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. दास ने पिछले दशक में संस्थान द्वारा किए गए हिलसा अनुसंधान और जागरूकता कार्यक्रमों के बारे में अपनी प्रस्तुति में बताया। डॉ. दास ने हिलसा के प्रवासीय स्थिति और फरक्का बैराज के प्रभाव पर प्रकाश डाला, मेस के आकार का नियमन, अत्यधिक मछली पकड़ना और किशोर मछलियों की हत्या, गंगा नदी में हिलसा मत्स्य पालन के लिए प्रमुख चुनौतियां हैं। इसके अलावा, डॉ. दास ने गंगा नदी में पूर्णवयस्क हिलसा पालन, हिलसा की कैटिव ब्रीडिंग और गंगा नदी में इसके प्रवास (अपस्ट्रीम/ डाउनस्ट्रीम) को रिकॉर्ड करने के लिए हिलसा की टैगिंग सहित संस्थान की पहलों पर भी प्रकाश डाला। डॉ. वाई. एस. यादव, निदेशक, बंगाल की खाड़ी कार्यक्रम अंतर-सरकारी संगठन (बीओबीपी), चेन्नई, ने "हिलसा मत्स्य संरक्षण और स्थिरता की दिशा में बीओबीपी-आईजीओ के प्रयास: भारतीय परिप्रेक्ष्य" पर अपनी प्रस्तुति दी और भारतीय राष्ट्रीय कार्य योजना (एनपीओए) पर प्रकाश डाला। डॉ. यादव ने कहा कि हिलसा के लिए भारत में एनपीओए पर अब तक कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई है। प्रो. अब्दुल वहाब, इकोफिश, वर्ल्डफिश, बांग्लादेश के टीम लीडर ने "हिलसा संरक्षण और मछुआरों के आजीविका सुधार: बांग्लादेश से केस स्टडीज" पर अपनी प्रस्तुति दी। प्रो. वहाब ने सामुदायिक भागीदारी, जन जागरूकता, हिलसा पकड़ने की प्रतिबंध अवधि के दौरान वैकल्पिक रूप से योजनाएं और सख्त निगरानी और प्रवर्तन, सरकार के प्रावधान के माध्यम से प्राप्त महत्वपूर्ण परिणामों को विस्तार से बताया। इस प्रक्रिया के माध्यम से, प्रो. वहाब ने कहा कि बांग्लादेश ने 5 वर्षों की अवधि में 9.2% तक ज्यादा हिलसा उत्पादन हासिल किया है। डॉ. माइक एकेस्टर, क्षेत्र निदेशक, दक्षिण पूर्व एशिया और प्रशांत, वर्ल्डफिश, म्यांमार ने "म्यांमार में हिलसा मत्स्य प्रबंधन के वित्तपोषण के लिए वित्तीय सुधार" पर प्रस्तुति दिया। डॉ. माइक ने हिलसा मत्स्य पालन के अलग अलग चरणों पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे एक हिलसा मछली इरावदी नदी के एक सहायक नदी से बेजिंग में किसी के खाने की मेज पे जाती है? कार्यक्रम का समापन प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ए.के.दास द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसके बाद राष्ट्रगीत हुआ। कार्यक्रम के दौरान वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर कुल 100 प्रतिभागी सक्रिय रूप से शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ए. के. साहू, डॉ. ए. के. दास, श्री डी. के. मीना, श्री संधाना कुमार और श्री एम. रामटेके ने किया।

संस्थान ने ग्रामीण महिलाओं की पोषण सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए मैनेज (Manage) के साथ 'न्यूट्रिस्मार्ट फिश' पर एक सहयोगी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया



डॉ. पी. चंद्रशेखर, महानिदेशक, मैनेज, हैदराबाद ने 10 अगस्त, 2021 को ग्रामीण महिलाओं की पोषण सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए "न्यूट्रिस्मार्ट फिश" पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भाकृअनुप - केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और मैनेज, हैदराबाद द्वारा 10-12 अगस्त, 2021 तक किया जा रहा है। उद्घाटन कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ. शाहजी फांड, सहायक निदेशक, कृषि-संबद्ध क्षेत्र में विस्तार केंद्र, मैनेज, हैदराबाद द्वारा स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम की शुरुवात की गई। संस्थान के निदेशक डॉ. वि. के. दास, ने अपने उद्घाटन भाषण में पोषण से भरपूर मछली और खाद्य और पोषण सुरक्षा में इसकी भूमिका पर जोर दिया। डॉ. पी चंद्रशेखर ने प्रतिष्ठित रफी अहमद किदवई पुरस्कार और सरदार बल्लववई पटेल सर्वश्रेष्ठ संस्थान पुरस्कार 2020 के लिए निदेशक डॉ. वि. के. दास को बधाई दी। इसके अलावा, उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रासंगिकता के बारे में प्रसन्नता व्यक्त की और पोषण सुरक्षा के बारे में विस्तार से बताया। तीन दिवसीय इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पोषण सुरक्षा के प्रमुख पहलुओं जैसे पोषण संबंधी जरूरतों का आकलन; बचपन के विकास में सुधार के लिए प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर अवस्था (1000 दिन) के दौरान पोषण संबंधी हस्तक्षेप का महत्व; महिलाओं में सामान्य पोषक तत्वों की कमी के विकार और निवारक उपाय; स्वास्थ्य भोजन के रूप में मछली; 'न्यूट्रि-स्मार्ट' मछली प्रजातियों पर उन्मुखीकरण; पोषण सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए एसआईएफ; न्यूट्रिफिश'-आजीविका सुरक्षा के लिए एक संभावित मार्ग, 'छिपी भूख' को संबोधित करने के लिए "न्यूट्रिफिश"; मछली और मत्स्य उत्पादों पर पोषण संबंधी आवश्यकता-आधारित मूल्यवर्धन; पोषण सुरक्षा को संबोधित करने के लिए लागत प्रभावी पोषण संवेदनशील नवाचार आदि विषय पर चर्चा की गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए कुल 135 व्यक्तियों ने पंजीकरण कराया है और इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। इस कार्यक्रम के प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में सभी व्याख्यानों से युक्त "ग्रामीण महिलाओं की पोषण सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए न्यूट्रिस्मार्ट फिश" नामक एक ई-पुस्तक प्रकाशित की गई। डॉ. वि. के. दास और डॉ. शाहजी संभाजी फंड कार्यक्रम निदेशक थे और डॉ. अपर्णा रॉय, डॉ. असित के. बेरा और श्रीमती प्रज्ञा. आर. स्वैन इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक थे।



CIFRI-ARGCURE, अर्गुलस परजीवी को नियंत्रित करने के लिए संस्थान द्वारा विकसित एक नवीन तकनीक है। इसका दिनांक 31 जुलाई 2021 को औपचारिक रूप से लाइसेंसधारी मेसर्स ग्लौकस एग्रोकेम प्राइवेट लिमिटेड कोलकाता को विनिर्माण और बिक्री के लिए निदेशक द्वारा स्थानांतरित किया गया।



भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 16वां पार्थेनियम जागरूकता सप्ताह मनाया



भाकृअनुप के माननीय महानिदेशक ने सभी आईसीएआर संस्थानों से अपील की थी कि वे 16-22 अगस्त 2021 को "पार्थेनियम जागरूकता सप्ताह" मनाएं और राष्ट्रीय प्रमुख गतिविधि के तहत स्वच्छ भारत अभियान के रूप में एक पार्थेनियम मुक्त परिसर सुनिश्चित करें। संस्थान ने पार्थेनियम से उत्पन्न स्वास्थ्य और पर्यावरणीय खतरों के बारे में विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों

और प्रदर्शनों का आयोजन करके 16वां पार्थेनियम जागरूकता सप्ताह मनाया। पार्थेनियम का नियंत्रण करने के लिए संस्थान परिसर के अंदर और बाहर दोनों जगह से ही पार्थेनियम उखाड़कर फेंका गया और उनके उन्मूलन हेतु रासायनिक का छिड़काव भी किया गया।

संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास के कुशल नेतृत्व में, 21.08.2021 को संस्थान मुख्यालय में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया, जहां स्टाफ सदस्यों को पार्थेनियम के खतरे के बारे में जागरूक किया गया। इसके बाद स्वच्छ भारत अभियान के हिस्से के रूप में पार्थेनियम खरपतवार की पहचान करने और उसे जड़ से उखाड़ने पर विशेष जोर देते हुए संस्थान परिसर में सफाई और स्वच्छता कार्यक्रम चलाया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के आसपास के स्थानीय क्षेत्रों को भी शामिल किया गया जहां पार्थेनियम

खरपतवार की पहचान की गई और खरपतवार नियंत्रण के लिए शाकनाशी का छिड़काव किया गया। जड़ से उखाड़े गए खरपतवारों को संस्थान के वर्मी कम्पोस्ट पिट में खाद बनाने के लिए डाला गया। इसके अलावा, नदिया के हरिंगहाटा ब्लॉक के खालसी वील क्षेत्र





के मठपारा और उत्तर भर्मापुर गांव में पार्थेनियम के संबंध में एक जागरूकता सह आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें मछुआरा समुदाय की महिलाओं को पार्थेनियम खरपतवार के खतरे के बारे में जागरूक किया गया था। उत्तर 24 परगना के बेलेडांगा बील में भी स्थानीय लोगों, किसानों और छात्रों को जागरूक किया गया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- रुशिकुल्या मुहाना, गंजम, उड़ीसा में मानसून के दौरान अगस्त महीने में मुख्य लैंडिंग केंद्र से 95 किलोग्राम मछली/दिन की औसत लैंडिंग दर्ज की गई। इस मुहाना लैंडिंग में पांच मछली प्रजातियां पायी गईं – हिलसा कीली (26.32 प्रतिशत), मुगिल सेफालस (10.53 प्रतिशत), एरियस एरियस (8.42 प्रतिशत), वालमुगिलकुनेशियस (5.88 प्रतिशत) और फेनेरोपेनियसइंडिकस (4.21 प्रतिशत)।
- टेलिस्कोपियम टेलिस्कोपियम, हॉर्न स्लैक एक गैस्ट्रोपॉड परिवार, पोटाभिडीडे का है जो स्थानीय तौर पर गोवा की कोंकणी भाषा में कोंगी के रूप में जाना जाता है। यह घोंघा प्रजाति मंडोवी-जुआरी मुहाना परिसर के पास रहने वाले स्थानीय लोगों का पसंदीदा भोजन है। अन्य पोषक तत्वों के अलावा इसमें प्रोटीन लगभग 21.01 प्रतिशत और लिपिड 18.9 प्रतिशत पाया जाता है।
- चिलिका जल क्षेत्र में पायी जाने वाली विदेशी मैक्रोफाइट, *फ्रेमितेस कारका* जिसे आमतौर पर "नाला घास" के रूप में जाना जाता है, इस लैगून की उत्पादकता को हानी पहुंचा रहा है। पारिस्थितिकी तंत्र पर इसके प्रभाव के आंकलन के लिए मास बैलेंसड मॉडलिंग (इकोपैथ विद इकोसिम) का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि पी. कारका की अनुपस्थिति में पारिस्थितिकी तंत्र में स्थिरता अधिक है। पर इस मॉडल में पी. कारका को सम्मिलित करने से इसकी परिपक्वता बढ़ जाती है।
- पौधे के अर्क पर आधारित एक कीटनाशक सूत्रीकरण को विकसित किया गया है। इसमें बहुत कम खुराक (10 पीपीएम) के साथ फॉर्मूलेशन जल्दी (आधे घंटे के भीतर) कार्य करता है तथा यह जल में घुलनशील होने के कारण जल क्षेत्र में कार्बनिक ध्यान स्तर को कम करने में सहायक है।

- मत्स्यायन निषेध अवधि पूरा होने के तुरंत बाद गोबिंदसागर जलाशय, हिमाचल प्रदेश के मछली पकड़ने के पैटर्न का सर्वेक्षण किया गया और पाया गया कि विदेशी कार्प साइप्रिनस कार्पिओ और हाइपोथिम्बिकस मोलिट्रिक्स की प्रचूरता है। इसके बाद स्वदेशी मत्स्य प्रजातियाँ, *स्पेराटा सिंघला* और *टोर पुटीटोरा* पायी गईं।

- छत्तीसगढ़ में कोडर जलाशय की मछली पकड़ संरचना की जांच से संकेत मिलता है कि वर्ष 2020 में इंडियन मेजर कार्प (कुल वार्षिक मत्स्य पकड़ का 37 प्रतिशत) की प्रचूरता पायी गयी।

बैठकें

- संस्थान के वैज्ञानिकों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से दिनांक 23 जुलाई, 2021 को भारतीय जल में विदेशी जलीय प्रजातियों के परिचय पर राष्ट्रीय समिति की 28वीं बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 24 और 25 जुलाई, 2021 को भाकअनुप-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान के पूर्व छात्र संघ द्वारा आयोजित सीआईएफई पूर्व छात्र बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 26 जुलाई, 2021 को पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन विभाग, बिहार सरकार, पटना द्वारा आयोजित राष्ट्रीय डॉल्फिन अनुसंधान केंद्र की पहली बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 27 जुलाई, 2021 को एनआईसी पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा आयोजित 15वीं ईएसी - नदी घाटी और जलविद्युत परियोजनाओं की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 30 जुलाई, 2021 को "पर्यावरणीय क्षरण के अनुकूलन हेतु मजबूर प्रवासन की लागत और लाभों पर एक अंतरसंबंध अध्ययन" पर एक वेबिनार में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 2 अगस्त, 2021 को भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता की कार्यकारी समिति की सांविधिक बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) की अध्यक्षता में दिनांक 13 अगस्त, 2021 को मत्स्य पालन संभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीनस्थ संस्थानों के निदेशकों की मासिक बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 19 अगस्त, 2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग मोड के माध्यम से भारतीय जल में विदेशी जलीय प्रजातियों के प्रवेश पर राष्ट्रीय समिति की 29वीं बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 21 अगस्त को डॉ. अनिल राय, सहायक महानिदेशक (आईसीटी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की उपस्थिति में इस कार्यक्रम के तहत तत्काल कार्रवाई पर चर्चा करने के लिए प्रेसिडेंट एग्रीकल्चर (एनईपीपीए) पर आईसीएआर नेटवर्क परियोजना के अनुमोदन पर बैठक में भाग लिया।

अन्य

- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा दिनांक 29 जुलाई 2021 को "अंतर्स्थलीय खुला जल में पेन पालन के माध्यम से उत्पादन वृद्धि" पर एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। आभासी प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य खुला जल के हितधारकों की आय और आजीविका में सुधार के लिए पेन पालन प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम के तकनीकी सत्र में कुल 120 प्रतिभागियों ने सक्रिय भाग लिया।
- संस्थान में दिनांक 29 जुलाई, 2021 को "आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए जलाशय मात्स्यिकी संवर्धन" पर एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें छात्रों, मात्स्यिकी महाविद्यालय के संकाय अध्यक्ष, विश्वविद्यालय, राज्यों के मत्स्या विभागों के अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केन्द्रों के विशेषज्ञ, प्रगतिशील किसान, मछुआरे, उद्यमी, गैर-सरकारी संगठन, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, झारखंड, मध्य प्रदेश जैसे विभिन्न राज्यों के स्वयं सेवी संस्था सहित 118 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान ने गंगा मात्स्यिकी के सतत प्रबंधन के उद्देश्य से दो राज्यों (झारखंड और पश्चिम बंगाल) के महाराजपुर, साहेबगंज, फरक्का, जंगीपुर और बरहामपुर में कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए मास्क और सैनिटाइज़र के वितरण के साथ जागरूकता पैदा करने के लिए पांच जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। साथ ही दिनांक 4-5 अगस्त 2021 को डॉल्फिन संरक्षण पर जागरूकता अभियान के माध्यम से 175 से अधिक लोगों को जागरूक किया गया। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा अभियान परियोजना के तहत आयोजित किया गया था।

- संस्थान ने दिनांक 4 अगस्त 2021 को कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले के करियाला गांव में भारत की आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर "सतत विकास के लिए पालन आधारित मत्स्य पालन पर जन जागरूकता कार्यक्रम" का आयोजन किया कार्यक्रम में चित्रदुर्ग जिले के गायत्री जलाशय में मत्स्य पालन से जुड़े लगभग 40 मछुआरों ने भाग लिया।
- ग्रामीण महिलाओं की पोषण सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए 'न्यूट्रिसमार्ट फिश' पर मैनेज, हैदराबाद के साथ तीन दिवसीय ऑनलाइन सहयोगात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक संस्थान में 10-12 अगस्त 2021 तक किया गया। इस कार्यक्रम में 135 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में दिनांक 10 से 13 अगस्त, 2021 तक आयोजित "एलसी-आईसीपीएमएस के सिद्धांतों और अनुप्रयोगों" पर चार दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण

- संस्थान ने 11 अगस्त 2021 को "गंगा नदी में हिल्सा मत्स्य संरक्षण और आजीविका सुधार पर संवेदीकरण" पर एक वेबिनार का आयोजन किया, जिसमें डॉ. बी. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सीआईएफआरआई, वाई.एस. यादव, निदेशक (बीओबीपीआईजीओ), प्रो. अब्दुल वहाब, इकोफिश, वर्ल्डफिश, बांग्लादेश के टीम लीडर, डॉ माइक एकेस्टर, क्षेत्र निदेशक, दक्षिण पूर्व एशिया और प्रशांत, वर्ल्डफिश, म्यांमार कार्यक्रम के वक्ता थे और उन्होंने हिल्सा के बारे में अनुभव साझा किया। दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में अनुसंधान और संरक्षण। वेबिनार में 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 18 अगस्त, 2021 को झारखंड के 12 जिलों के जिला मत्स्य अधिकारियों के साथ अनुसूचित जाति उप-योजना और आदिवासी उप-योजना के तहत झारखंड में पेन पालन और सजावटी मत्स्य पालन पर एक दिवसीय लोकरपन हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया।

सम्पादक मण्डल

सम्पादक मण्डल की ओर से आप समस्त पाठकों के सामने चतुर्थ वर्ष का सातवें अंक (अप्रैल, 2021) प्रस्तुत है। आप सभी के बहुमूल्य सुझाव के लिए हार्दिक धन्यवाद। आगे भी आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा। सम्पादक मण्डल की तरफ से सभी पाठकगण को शुभकामनाएँ!

